विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सख्ती, रैगिंग निषेध अधिनियम में सजा का प्रावधान और शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जाने वाली सतत निगरानी से मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में प्रथम वर्ष में दाखिला लेने वाले छात्रों को मानसिक व शारीरिक यातना देने वाली रैगिंग भले ही रुक गई हो, लेकिन जिस तरह से डिजिटल रैगिंग के मामले सामने आने शुरू हुए हैं, उसने मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों के नए सत्र को लेकर तमाम चिंताएं खड़ी कर दी हैं।

जॉब अलर्ट

आईबी में 4,987 पदों पर भर्ती

- गृह मंत्रालय के तहत इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) ने सिक्योरिटी असिस्टेंट तथा एग्जीक्यूटिव के पद पर 4,987 रिक्तियों की घोषणा की है। आवेदन प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, जो 17 अगस्त तक चलेगी। इच्छुक और योग्य उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट www.mha.gov.in/en/notifications/vacancies पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

बीएसएफ में ट्रेड्समैन नियुक्ति

- बार्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ) में 3588 कुक, मोची, नाई, वॉशरमैन, वॉटर कैरियर, कारपेंटर, स्वीपर जैसे ट्रेड्समैन के पदों पर भर्ती की जाएगी। इसके लिए किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10वीं पास और संबंधित ट्रेड में आईटीआई के प्रमाणपत्र धारक 25 अगस्त तक आवेदन कर सकते हैं।

पैरामेडिकल भर्ती, एमपी

- मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल ने पैरामेडिकल के 752 पदों पर भर्ती निकाली है। आवेदन 11 अगस्त तक कर सकते हैं। इच्छुक उम्मीदवार आधिकारिक वेबसाइट esb.mp.gov.in पर आवेदन कर सकते हैं।

अग्निवीर के आवेदन

- भारतीय सेना/नौसेना/वायु सेना में अग्निवीर भर्ती-2025 के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 5 अगस्त 2025 है। इसके बाद लिखित व शारीरिक परीक्षा होगी।

सीआरपीएफ कांस्टेबल

- सीआरपीएफ हेड कांस्टेबल मिनिस्टीरियल और एएसआई स्टेनो भर्ती के लिए आवेदन की अंतिम तारीख 12 अगस्त 2025 निर्धारित की गई है।

मध्य प्रदेश शिक्षक भर्ती

कुल पद	13089
योग्यता	ग्रेजुएट
अंतिम तिथि	06/08/2025

पूर्वी रेलवे में अप्रेंटिस

कुल पद	3115
योग्यता	10वीं
अंतिम तिथि	08/08/2025

इस हफ्ते प्रतियोगी परीक्षाएं

नीट पीजी-2025

- इस परीक्षा का इंतजार खत्म हो गया है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर तीन अगस्त को परीक्षा आयोजित की जाएगी। पहले यह परीक्षा 15 जून को होने वाली थी।

यूपीएससी सीएपीएफ

- संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की सीएपीएफ परीक्षा तीन अगस्त को दो पालियों में आयोजित होगी।

बड़े काम की बात

बीटेक में दाखिला लें अथवा बीई का विकल्प चुन सकते

- बीटेक (बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी) और बीई (बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग) दोनों ही चार साल की अंडर ग्रेजुएट इंजीनियरिंग डिग्री हैं। लेकिन दोनों के कोर्स में कुछ अंतर है। बीटेक पाठ्यक्रम जहां प्रौद्योगिकी और व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर अधिक केंद्रित रहता है, इसमें तकनीकी और सॉफ्टवेयर विषयों पर अधिक जोर दिया जाता है। इसके मुकाबले बीई में पारंपरिक इंजीनियरिंग विषयों के सैद्धांतिक ज्ञान और सिद्धांतों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है। बीटेक में व्यावहारिक और परियोजना आधारित शिक्षा पर अधिक जोर रहता है, जबकि बीई में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ डिजाइन पर अधिक जोर रहता है। इन्हीं कारणों से बीटेक को बीई की तुलना में अधिक उद्योग उन्मुख माना जाता है। बीटेक में प्रवेश आमतौर पर जेईई या राज्यों की संयुक्त प्रवेश परीक्षा के माध्यम से होता है, वहीं बीई में प्रवेश विश्वविद्यालय आधारित प्रवेश परीक्षाओं के जरिए होता है। हालांकि ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन दोनों डिग्रियों को समान मान्यता देता है, और दोनों पाठ्यक्रमों के लिए नौकरी के अवसर भी समान हैं। बीई डिग्री प्रदान करने वाले प्रसिद्ध संस्थान बिट्स पिलानी, अन्ना विश्वविद्यालय हैं, जबकि आईआईटी, एनआईटी जैसे संस्थान बीटेक डिग्री प्रदान करते हैं।

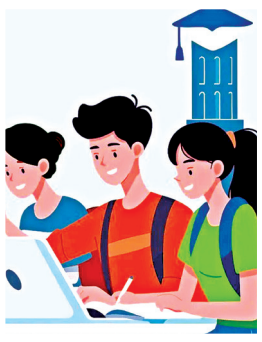

डिप्लोमा धारकों के लिए है बीटेक लैटरल एंट्री

- बीटेक लैटरल एंट्री उन छात्रों के लिए है, जो डिप्लोमा धारक हैं और अब आगे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करना चाहते हैं। इंजीनियरिंग में डिप्लोमा करने वालों के लिए में बीटेक लैटरल एंट्री एक शानदार विकल्प है। इस प्रोग्राम के जरिए सीधे बीटेक में दूसरे साल की पढ़ाई शुरू की जा सकती है। यह खास मौका उन छात्रों के लिए होता है जो 10वीं या 12वीं के बाद तीन साल का इंजीनियरिंग डिप्लोमा कर चुके हैं।

कॉलेज में पहला कदम...

डिजिटल रैगिंग का डर

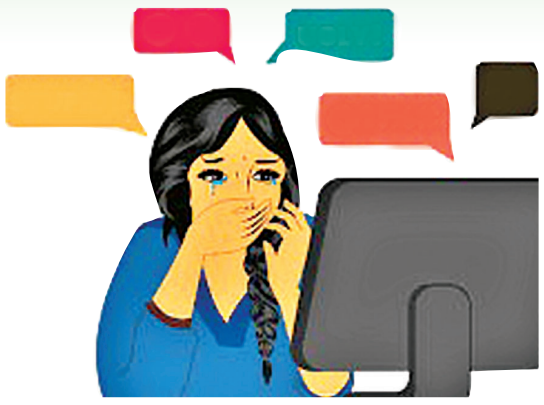

डिजिटल रैगिंग को साइबर बुलिंग भी कहा जाता है। यह तेजी से पांव पसारती हुई गंभीर समस्या है, जो पीड़ित छात्र को मानसिक और भावनात्मक रूप से आहत करती है। साइबर बुलिंग में ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के दुरुपयोग से किसी को परेशान करने के साथ डराया या अपमानित किया जाता है। शैक्षणिक संस्थानों में साइबरबुलिंग के शिकार छात्र भावनात्मक रूप से गंभीर पीड़ित हो सकते हैं। उनके आत्मसम्मान और शैक्षणिक प्रदर्शन पर असर पड़ सकता है। अलग-थलग पड़कर पढ़ाई में रुचि खोकर कक्षाएं तक छोड़ सकते हैं। केंद्र सरकार द्वारा राज्यसभा में दी गई जानकारी के मुताबिक वर्ष 2024 में मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग की सबसे अधिक 33 शिकायतें उत्तर प्रदेश से आई थीं। बिहार में इस तरह की 17, राजस्थान में 15 और मध्यप्रदेश से 12 शिकायतें मिली थीं।

कैसे होती है डिजिटल रैगिंग या ट्रोलिंग, ऐसे होगी रोकथाम

डिजिटल रैगिंग ऑनलाइन प्लेटफॉर्म जैसे सोशल मीडिया, मैसेजिंग ऐप्स, या ईमेल के माध्यम से की जाती है। किसी को सोशल मीडिया पर लगातार अपमानजनक संदेश भेजना या अभद्र भाषा का प्रयोग करना, ऑनलाइन उत्पीड़न की श्रेणी में आता है। इसी तरह किसी को परेशान करने के लिए सामूहिक रूप से टिप्पणी करना या संदेश भेजना ट्रोलिंग में आता है। किसी की प्रोफाइल फोटो या निजी जानकारी का उपयोग करके फर्जी प्रोफाइल बनाकर दुरुपयोग करना ऑनलाइन झूठी और अपमानजनक बातें फैलाने को भी इसमें शामिल किया गया है। सरकार ने रैगिंग रोकने के लिए मेडिकल कॉलेजों और अन्य संस्थानों में रैगिंग की रोकथाम और निषेध विनियम 2021 का पालन अनिवार्य किया है। राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने भी डिजिटल रैगिंग की घटनाओं का संज्ञान लेते हुए नियमित निगरानी के निर्देश दिए हैं।

फर्जी आईडी से जूनियर छात्रों को मैसेज और फोन कॉल

कानपुर के एक मेडिकल कॉलेज के सीनियर छात्रों ने भी कुछ दिनों पहले एमबीबीएस प्रथम वर्ष के छात्रों के हॉस्टल के चारों तरफ सीसीटीवी कैमरे और सुरक्षा गार्डों का पहरा देखकर ई-रैगिंग का रास्ता खोजा था। फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर जूनियर छात्रों को मैसेज भेजकर रैगिंग की गई। कुछ सीनियर छात्रों ने फर्जी इंस्टाग्राम आईडी बनाकर अलग-अलग स्थानों से मैसेज और फोन कॉल करके जूनियर छात्रों को मानसिक प्रताड़ना दी। पीड़ित छात्रों के इंस्टाग्राम चैट का स्क्रीन शॉट और फोन कॉल की डिटेल लिए जाने पर मामले का खुलासा हुआ। साइबर सेल की जांच में पता चला कि सीनियर छात्रों ने फर्जी इंस्टाग्राम प्रोफाइल बनाई थी। कॉलेज प्रशासन ने हॉस्टल में रैगिंग के आरोप में आठ सीनियर छात्रों को छह महीने के लिए सस्पेंड करके सेमेस्टर परीक्षा में बैठने से रोक दिया था।

75%

मामले झूठी अफवाह, सामाजिक बहिष्कार और चिढ़ाऊ नाम आदि से संबंधित होते हैं।

सुरक्षित डिजिटल स्पेस चाहिए तो चुप न रहें

डिजिटल रैगिंग या साइबर बुलिंग शैक्षणिक संस्थानों में भय और अविश्वास की संस्कृति बढ़ाती है। इसके बावजूद अक्सर पीड़ित छात्र चुप रह जाते हैं। घटनाओं की संस्थान या पुलिस में रिपोर्ट नहीं करते। इसके पीछे उन्हें शर्मिंदगी का डर और विधायी उपायों की जानकारी नहीं होना होता है। हालांकि सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम-2000 और उसके बाद के संशोधन कुछ कानूनी उपाय प्रदान किए हैं, लेकिन इनका प्रवर्तन बड़ी चुनौती है। ऐसे में युवाओं को सुरक्षित डिजिटल स्पेस प्रदान करने के लिए जागरूकता जरूरी है। प्रौद्योगिकी कंपनियों को भी सामग्री नियंत्रण में सुधार करके, अपमानजनक व्यवहार रोकने वाले टूल्स उपलब्ध कराने चाहिए।

80%

भारत में साइबर बुलिंग की दर है, किशोरों और युवाओं के बीच। मैकेफी के 'हिडेन इन प्लेन साइट' अध्ययन में भारत को दुनिया के सर्वाधिक प्रभावित देशों में बताया गया है।

फर्जी आईडी या प्रोफाइल से छात्रों को मानसिक और भावनात्मक रूप से आहत करने की बढ़ती घटनाओं ने खड़े किए नए सवाल

लेखक: मानस सेठ, युवा उद्यमी हैं और शैक्षिक व सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं

एक-दूसरे को थप्पड़ मारने का टॉस्क और रेन डांस

बीएचयू में डिजिटल रैगिंग के दौरान प्रथम वर्ष के छात्रों को एक-दूसरे को थप्पड़ मारने का टॉस्क दिया गया। कूलर में पानी भरवाने के साथ ही पानी में भिगोकर डांस भी करवाया गया। विरोध जताने वाले जूनियर छात्रों को कक्षा से बहिष्कार की धमकी दी गई। प्रताड़ित छात्रों ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को ई मेल से शिकायत की तो बीएचयू के एंटी रैगिंग सेल ने जांच की और 28 छात्रों को दोषी पाया।

नई किताबें

- अमेजन बुकशॉप पर उपलब्ध मैट रिचटेल की पुस्तक-हम कैसे बड़े होते हैं, में स्मार्ट फोन की दिलचस्प बहस को आगे बढ़ाती हुई गैर-काल्पनिक कथा को पिरोया गया है। पुलित्जर पुरस्कार विजेता न्यूयॉर्क टाइम्स के पत्रकार मैट रिचटेल द्वारा लिखी गई यह पुस्तक इस बहस के साथ शुरू होती है कि क्या स्मार्टफोन का इस्तेमाल किशोरों में चिंता और अवसाद बढ़ा रहा है। पुस्तक में किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य संकट के अस्तित्व पर सवाल उठाने के बजाय, रिचटेल का मानना है कि आज किशोरों द्वारा महसूस किया जा रहा संकट उस दुनिया के लिए एक उचित प्रतिक्रिया है, जिसकी चुनौतियां शारीरिक की बजाय अमूर्त और बौद्धिक होती जा रही हैं। किशोरावस्था बदल गई है। यौवन की उम्र कम हो गई है, जिससे युवा पहले से कहीं अधिक समय तक असुरक्षित स्थिति में फंसे रहते हैं और स्मार्टफोन के प्रलोभनों के लिए विशेष रूप से खुले होते हैं।

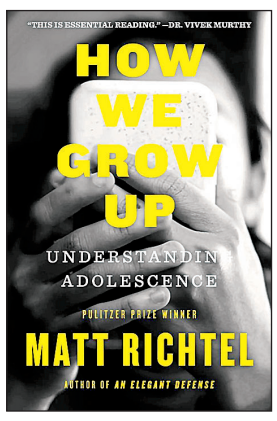

- लुसेंट की लिखी प्राथमिक अंकगणित पुस्तक गागर में सागर जैसी है। यह पुस्तक गणितीय अवधारणाओं को समझने और सीखने के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले छात्र-छात्राओं के लिए बेहद उपयोगी है। इसमें अंकगणित के बुनियादी सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझाया गया है। पुस्तक प्रतियोगी परीक्षाओं एसएससी, रेलवे, बैंकिंग आदि की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण प्रश्नों के साथ उनका समाधान भी उपलब्ध कराती है। पुस्तक एनसीईआरटी पाठ्यक्रम पर आधारित है। जिससे प्रतियोगी परीक्षाओं में अधिकतर सवाल पूछे जाते हैं। पुस्तक में छात्रों को अभ्यास करने और अपनी समझ की जांच करने के लिए पर्याप्त प्रश्न दिए गए हैं। पुस्तक अमेजन, फ्लिपकार्ट, मीशो पर ऑनलाइन के अलावा बाजार में भी उपलब्ध है।

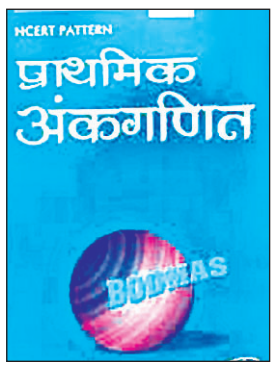

लेखक : प्रो. क्षमा त्रिपाठी, कानपुर

रसोई से रोबोट तक मतलब एचबीटीयू

देश के सबसे पुराने कॉलेज ने देश भर के गैर आईआईटी संस्थानों में बनाई नई साख

कानपुर स्थित हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी (एचबीटीयू) तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में एक शताब्दी से अधिक के गौरवशाली इतिहास का मजबूत प्रकाश स्तंभ है। ऑयल, पेंट, प्लास्टिक, फूड, लेदर टेक्नालॉजी के साथ संस्थान आईटी और कम्प्यूटर साइंस में भी अपना कमाल दिखा रहा है। साल 1921 में अपनी स्थापना के बाद से संस्थान ने देश के औद्योगिक और तकनीकी विकास में यादगार भूमिका निभाई है। संस्थान ने आईआईआरएफ रैंकिंग- 2024 में पहले गैर आईआईटी संस्थान के रूप में टॉप- 10 संस्थानों में जगह बनाकर अपनी प्रतिष्ठा को नया आयाम दिया है।

एचबीटीयू की शुरुआत 1920 में कानपुर में सरकारी अनुसंधान संस्थान की स्थापना के साथ हुई थी। यह पहल सर स्पेंसर हरकोर्ट बटलर की दूरदर्शिता से प्रेरित थी, जो उस समय संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश का पूर्ववर्ती नाम) के गवर्नर थे। कानपुर की उस समय की औद्योगिक स्थिति के अनुरूप चमड़ा, रंगाई, चीनी के रसायन विज्ञान को गति देने के लिए इस संस्थान की आवश्यकता महसूस की गई। 25 नवंबर,1921 को सर स्पेंसर हरकोर्ट बटलर ने मुख्य भवन की आधारशिला रखी । प्रतिष्ठित डाई वैज्ञानिक डॉ. ईआर वॉटसन को पहला प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। 1926 में इसका नाम बदलकर हरकोर्ट बटलर टेक्नालॉजिकल इंस्टीट्यूट (एचबीटीआई) किया गया। पहली सितंबर, 2016 को उत्तर प्रदेश सरकार ने संस्थान का हरकोर्ट बटलर टेक्निकल यूनिवर्सिटी (एचबीटीयू) के रूप उन्नयन कर दिया।

ह्यूमैनिटीज और सोशल साइंसेज को भी स्थान

एचबीटीयू को मुख्य रूप से चार अलग-अलग स्कूलों इंजीनियरिंग, केमिकल, बेसिक एंड एप्लाइड साइंसेज तथा स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज में व्यवस्थित किया गया है । इनके अंतर्गत 13 स्नातक (बीटेक) कार्यक्रम तथा बीबीए, 11 एमटेक कार्यक्रमों के साथ एमसीए, एमबीए के अलावा भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित में एमएससी डिग्री एवं सभी विभागों में पीएचडी कार्यक्रम संचालित हैं । विश्वविद्यालय के सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स और केमिकल इंजीनियरिंग विभाग पीएचडी कार्यक्रमों के लिए गुणवत्ता सुधार कार्यक्रम केंद्रों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं।

आरएंडडी में पहला स्थान नवाचार विनिमय में छलांग

- एचबीटीयू एक उत्कृष्टता केंद्र वाला संस्थान है जिसमें अनुसंधान और विकास (आर एंड डी) तथा इनक्यूबेशन पर विशेष जोर है। विश्वविद्यालय ने आरएंडडी योजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने का ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। अनुसंधान और एमओयू श्रेणी में बेहतरीन प्रदर्शन करने पर भारतीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क रैंकिंग में एचबीटीयू को सभी राज्य विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान मिला है। संस्थान ने कैंपस में आरएंडडी का उन्नत केंद्र स्थापित करने के लिए जर्मन बहुराष्ट्रीय निगम नार्डिश एनर्जी सिस्टम्स के साथ एमओयू किया है।

केमिकल, पेंट, ऑयल और फूड टेक्नालॉजी में बादशाहत

- एचबीटीयू में हालिया प्लेसमेंट में केमिकल इंजीनियरिंग ने कंप्यूटर साइंस और आईटी इंजीनियरिंग को पछाड़ दिया। केमिकल इंजीनियरिंग के 66 छात्रों को 78 से ज्यादा जॉब ऑफर मिले। दूसरे स्थान पर पेंट, ऑयल और फूड टेक्नोलॉजी में 95 फीसदी और तीसरे नंबर पर इलेक्ट्रिकल और मैकेनिकल ब्रांच में 90 फीसदी छात्रों का प्लेसमेंट हुआ।